Prepp
Your Personal Exams Guide

संस्कृत साहित्य (कोड–22)

Time : 3 Hours
समय : 3 घंटे

M.M. : 150
अधिकतम अंकः 150

नोट : कुल पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान (30) है। प्रश्न संख्या 1 अनिवार्य है। खण्ड 1 में से किन्हीं दो प्रश्नों तथा खण्ड 2 में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न के खण्डों का उत्तर एक साथ दीजिये।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए : (4x7.5=30)

(अ) निम्नलिखितेषु संस्कृतेन सूत्रोल्लेखपूर्वकं विग्रहप्रदर्शनसहितं समासनाम उल्लिख्यताम् :

त्रिभुवनम्, चित्रगुः, राजपुरुषः, अधिहरि, पाणिपादम् ।

(आ) भारतीयसंस्कृतौ पुरुषार्थानां महत्त्वं प्रतिपादयत ।

(इ) अधोलिखितेषु वाक्येषु वाच्यपरिवर्तनं विधीयताम् --

(i) गोपालः गां पयः दोग्धि ।

(ii) त्वं मम मित्रं पश्य ।

(iii) भवता सर्वदैव मिथ्या कथ्यते ।

(iv) सर्वे स्वजननान् नयन्तु ।

(v) अहं गतवर्षे चण्डीमन्दिरम् अगच्छम् ।

(ई) निम्नलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयोः सन्दर्भनिर्देशपूर्वकं व्याख्या विधीयताम् :

(i) हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ।

(ii) अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ।।

(iii) गुरूपदेशश्च नाम पुरुषाणामखिलमलप्रक्षालनक्षममजलं स्नानम्, अनुपजातपलितादिवैरूप्यजरं वृद्धत्वम्, अनारोपितमेदोदोषं गुरूकरणम्, असुवर्णविरचनमग्राम्यं कर्णाभरणम् ।

(उ) अधोनिर्दिष्टेषु कयोश्चिद् द्वयो: विषययो: टिप्पणी संस्कृतभाषया लिख्यताम् --

(i) दण्डिप्रणीतं दशकुमारचरितम् ।

(ii) कौटिल्यविरचितम् अर्थशास्त्रम् ।

(iii) कल्हणस्य राजतरङ्गिणी ।

(ऊ) अद्वैतवेदान्तदर्शनस्य समाजोपयोगित्वं प्रदर्शयत ।

(ऋ) संस्कृतकाव्यानां मानवसंवेदनाविषयिणीं प्रासङ्गिकतां समुपस्थापयत ।

खण्ड - I

2. (अ) निम्नलिखित अवतरण के आधार पर इसके नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दीजिए :(15)

अनया दुराचारया कथमपि दैववशेन परिगृहीता विक्लवा भवन्ति राजान:, सर्वाविनयाधिष्ठानतां च गच्छन्ति। तथाहि अभिषेकसमय एव चैतेषां मङ्गलकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्यधूमेनेव मलिनीक्रियते हृदयम्, पुरोहितकुशाग्रसम्मार्जनीभिरिवापह्रियते क्षान्ति:, उष्णीषपट्टबन्धेनेवाच्छाद्यते जरागमनस्मरणम्, आतपत्रमण्डलेनेवापसार्य्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापह्रियते सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्यन्ते गुणा:, जयशब्दकलकलरवैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादा:, ध्वजपटपल्लवैरिव परामृश्यते यश: ।

(i) के सर्वाविनयाधिष्ठानतां गच्छन्ति ?

(ii) क्षान्ति: काभि: इव अपह्रियते ?

(iii) वेत्रदण्डैरिव के उत्सार्यन्ते ?

(iv) 'चामरपवनैरिवापह्रियते सत्यवादिता' इत्यस्य क: आशय: ?

(v) जरागमनस्मरणं कस्य बन्धेनेव आच्छाद्यते ?

(आ) निम्नलिखित अवतरण का संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

Prepp
Your Personal Exams Guide

सब प्राणियों को काल का अनुभव है । काल की सत्ता सब चराचर भूतों पर प्रभावी है । कोई ऐसा नहीं जो काल के अधीन न हो । काल जीवन का कठोर सत्य है । काल की कृपा का नाम आयु है और काल का कोप मृत्यु । संसार का आदि काल में है और संसार का अन्त भी काल है । काल के आगे पीछे और कुछ नहीं बचता । काल से सभी भूतों की रचना है, काल ही उन्हें मार देता है । सोचकर देखें तो सूर्य और चन्द्र, धरती और आकाश, महासागर और महापर्वत - सारी वस्तुओं पर काल का अंकुश है । अग्नि और वायु जैसे देव और प्रकृति की सारी शक्तियाँ एक-एक करके कालचक्र के अधीन हैं । काल की इस महिमा को देखकर भृगुऋषि ने पूर्व युग में कालपरक एक गीत गाया था ।

3. निम्नलिखित में से किसी एक पर 250 शब्दों में संस्कृत में निबन्ध लिखिए : (30)

(अ) रम्या रामायणी कथा ।

(आ) संस्काराणां जीवनोपयोगित्वम् ।

(इ) संस्कृतवाङ्मये वैज्ञानिकसन्दर्भाः ।

(ई) मीमांसादर्शनस्य कर्मप्रतिपादकता ।

4. चार्वाकदर्शन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन कीजिये । (30)

खण्ड - II

5. कालिदास के काव्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (30)

6. संस्कृत नाटक साहित्य के उद्‌भव तथा विकास की चर्चा कीजिए । (30)

7. 'महाभारत समस्त ज्ञानराशि का भण्डार है' इस उक्ति की सप्रमाण समीक्षा कीजिए । (30)